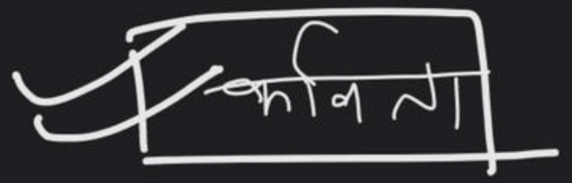
unacademy

Welcome



Vasant : Jhansi ki Raani (Kavita)

Course on Hindi CBSE Class-6

Pooja Shah • Lesson 3 • Sept 21, 2024

unacademy

झाँसी की रानी



सुभद्रा कुमारी चौहान का जीवन परिचय

हिंदी भाषा की महान कवयित्री **सुभद्रा कुमारी** का जन्म

- **जन्मस्थान** - 16 अगस्त, 1904, निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

प्रमुख रचनाएँ - इनकी प्रमुख कविताओं मे झांसी की रानी अनोखा दान ,वीरों का कैसा हो वसंत, पानी और धूप, जलियाँवाला बाग में बसंत प्रमुख हैं।

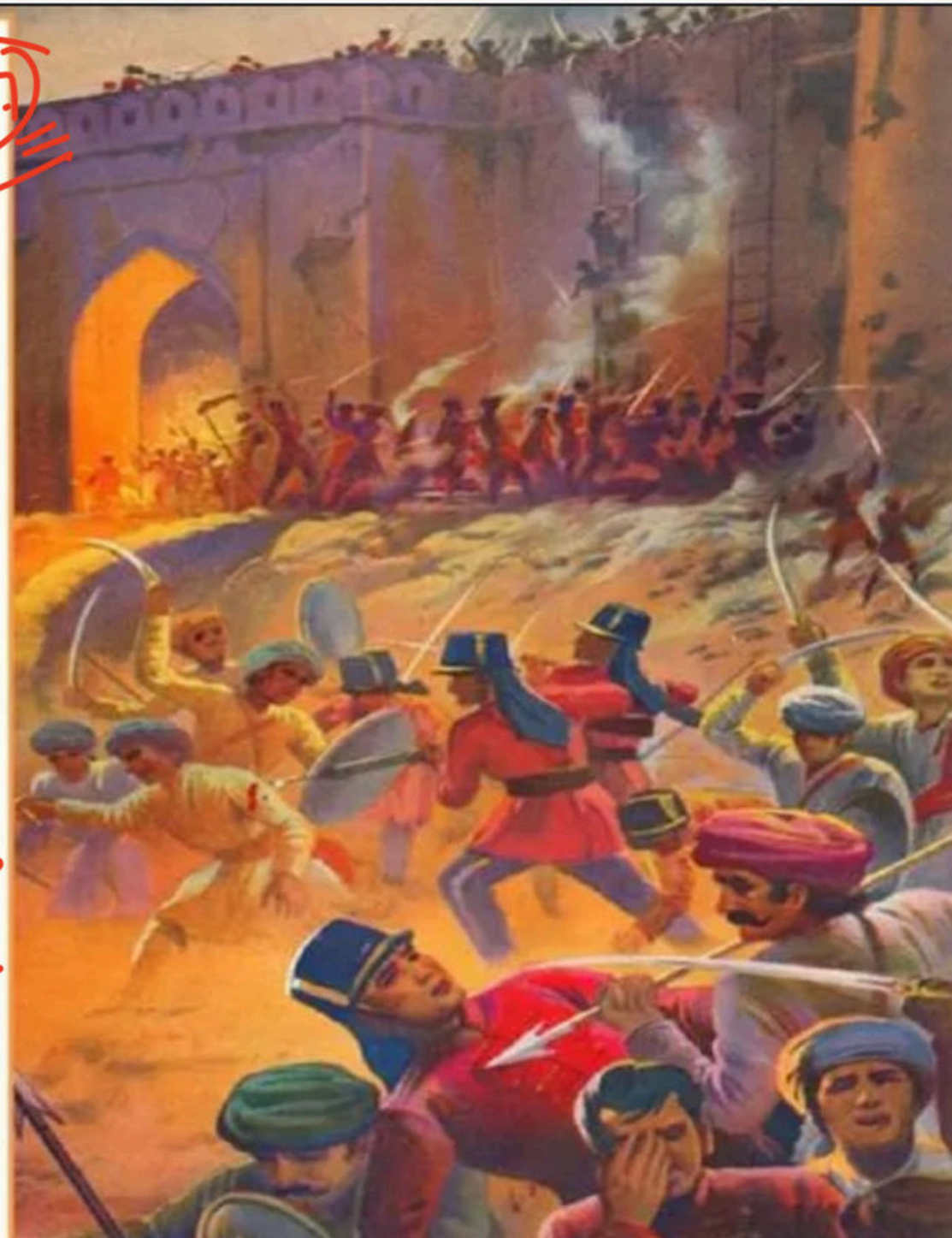
पुरस्कार - 6 अगस्त 1976 को भारतीय डाकतार विभाग ने सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक-टिकट जारी किया था।

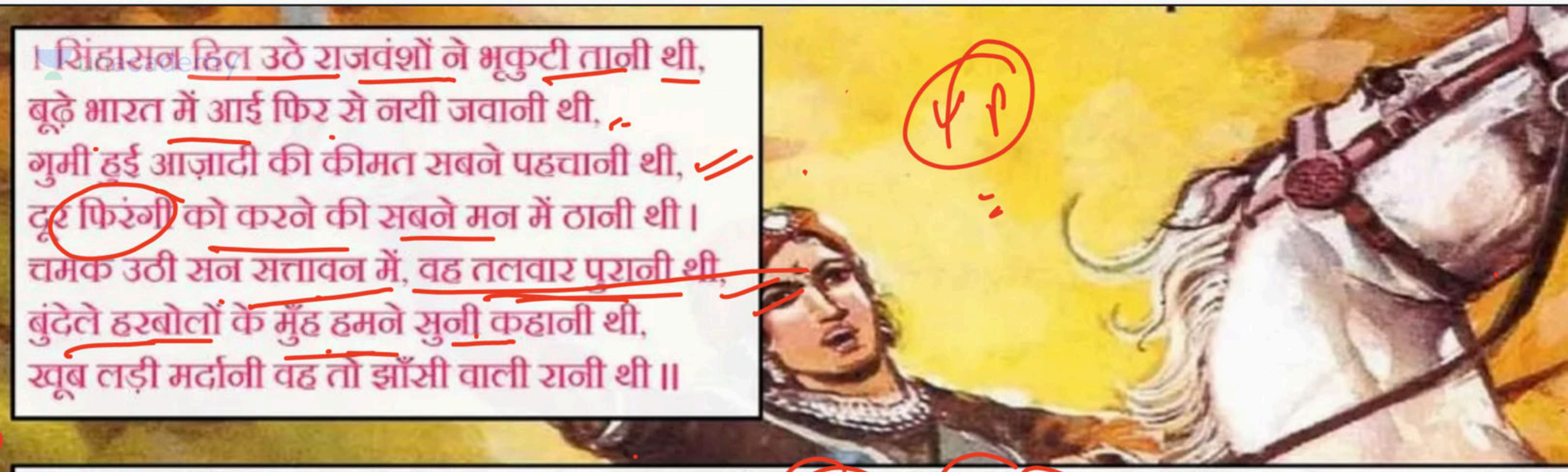
मृत्यु - 15 फरवरी, 1948, जबलपुर, मध्यप्रदेश



unacademy

रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी थीं और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजी हुकुमत के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले वीरों में से एक थीं। वे ऐसी वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ही ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से मोर्चा लिया और रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हो गयीं परन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपने राज्य झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया।





सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आज़ादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

व्याख्या- लेखिका ने झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के साहस और बलिदान का वर्णन करते हुए कहा है कि किस तरह उन्होंने गुलाम भारत को आज़ाद करवाने के लिए हर भारतीय के मन में चिंगारी लगा दी थी। रानी लक्ष्मी बाई के साहस से हर भारतवासी जोश से भर उठा और सबके मन में अंग्रेजों को दूर भगाने की भावना पैदा होने लगी। 1857 में उन्होंने जो तलवार उठाई थी यानी अंग्रेजों के खिलाफ जंग छेड़ी थी, उससे सभी ने अपनी आज़ादी की कीमत पहचानी थी।

शब्दार्थ - भृकुटी तानना - क्रोध करना। गुमी हुई - खोई हुई। फिरंगी - विदेशी (अंग्रेज़)।
मन में ठानना - पक्का इरादा करना। हरबोले - हर व्यक्ति के मुँह से।

2. कानपुर के नाना की, मुँहबोली बहन छबीली थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नानां के सँग पढ़ती थी वह, नानां के सँग खेली थी,
बरछी ढाल, कृपाण, कटारी उसकी यही सहेली थी।
वीर शिवाजी की गाथायें उसकी याद ज़बानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥



व्याख्या- कानपुर के नाना साहब ने बचपन में ही रानी लक्ष्मीबाई की अद्भुत प्रतिभा से प्रभावित होकर, उन्हें अपनी मुंह-बोली बहन बना लिया था। नाना साहब उन्हें युद्ध विद्या की शिक्षा भी दिया करते थे। लक्ष्मीबाई बचपन से ही बाकी लड़कियों से अलग थीं। उन्हें गुड्डे-गुड़ियों के बजाय तलवार, कृपाण, तीर और बरछी चलाना अच्छा लगता था।

शब्दार्थ - कृपाण – तलवार । अवतार - विशेष रूप से जन्म लेना । पुलकित – प्रसन्न ।
व्यूह - रचना - मोर्चा बनाना । दुर्ग तोड़ना – किला तोड़ना । खिलबाड़ – खेल ।

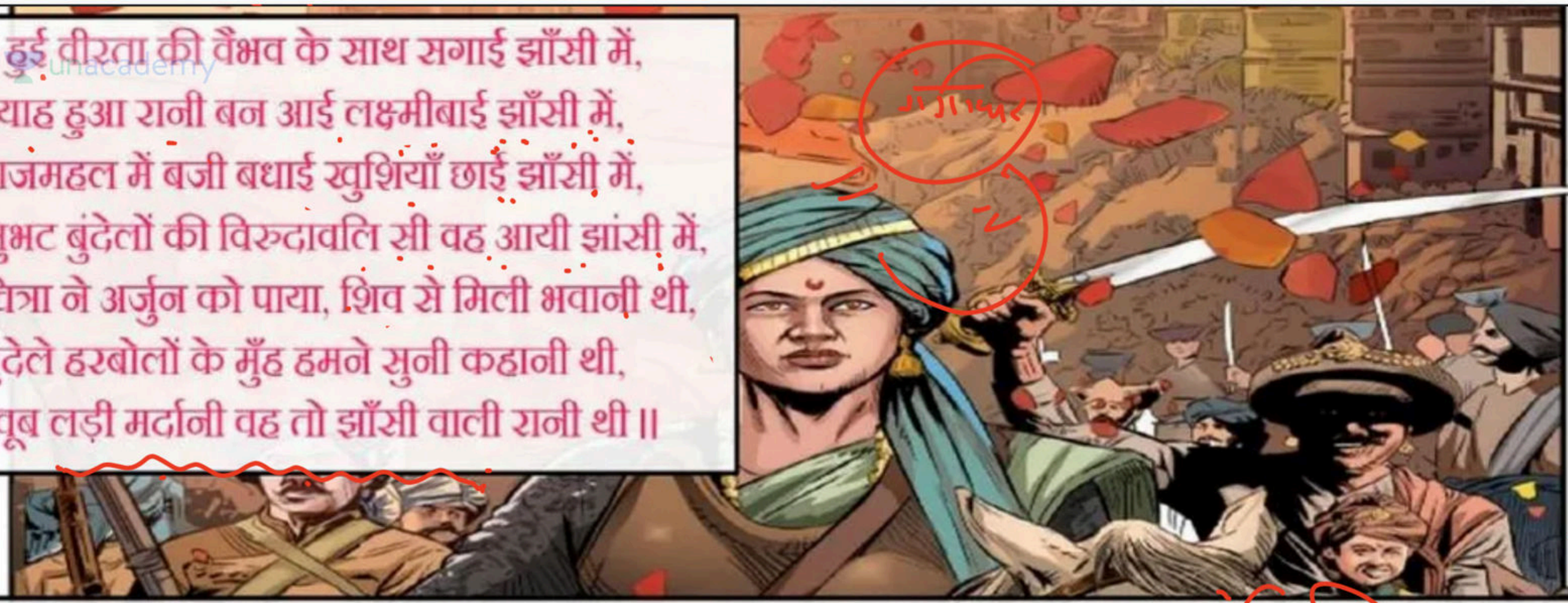
3 लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध-व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना ये थे उसके प्रिय खिलवार।
महाराष्ट्र -कुल-देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥



व्याख्या- यह कहना मुश्किल है कि रानी लक्ष्मीबाई लक्ष्मी थी, दुर्गा थीं। उन्होंने स्वयं वीरता के रूप में जन्म लिया था। उसकी तलवारबाज़ी मराठों में प्रसन्नता की लहर भर देती थीं। नकली युद्ध, दुश्मनों को घेरना, शिकार करना,सेना घेरना, किले तोड़ना- यही बचपन से रानी के प्रिय खेल थे। महाराष्ट्र की कुलदेवी माँ की वह पूजा भी कियाकरती थीं। बचपन से ही इनमें वीरता के संस्कार भरे हुए थे। बुंदेलवासी उस वीर स्त्री के साहस की कथा सुनाते हैं।

शब्दार्थ - अवतार - विशेष रूप से जन्म लेना । पुलकित – प्रसन्न । व्यूह-रचना - मोर्चा बनाना । दुर्ग तोड़ना – किला तोड़ना । खिलबाड़ - खेल । भवानी - पार्वती ।

4 हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई खुशियाँ छाई झाँसी में,
सुभट बुंदेलों की विरुदावलि सी वह आयी झांसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव से मिली भवानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥



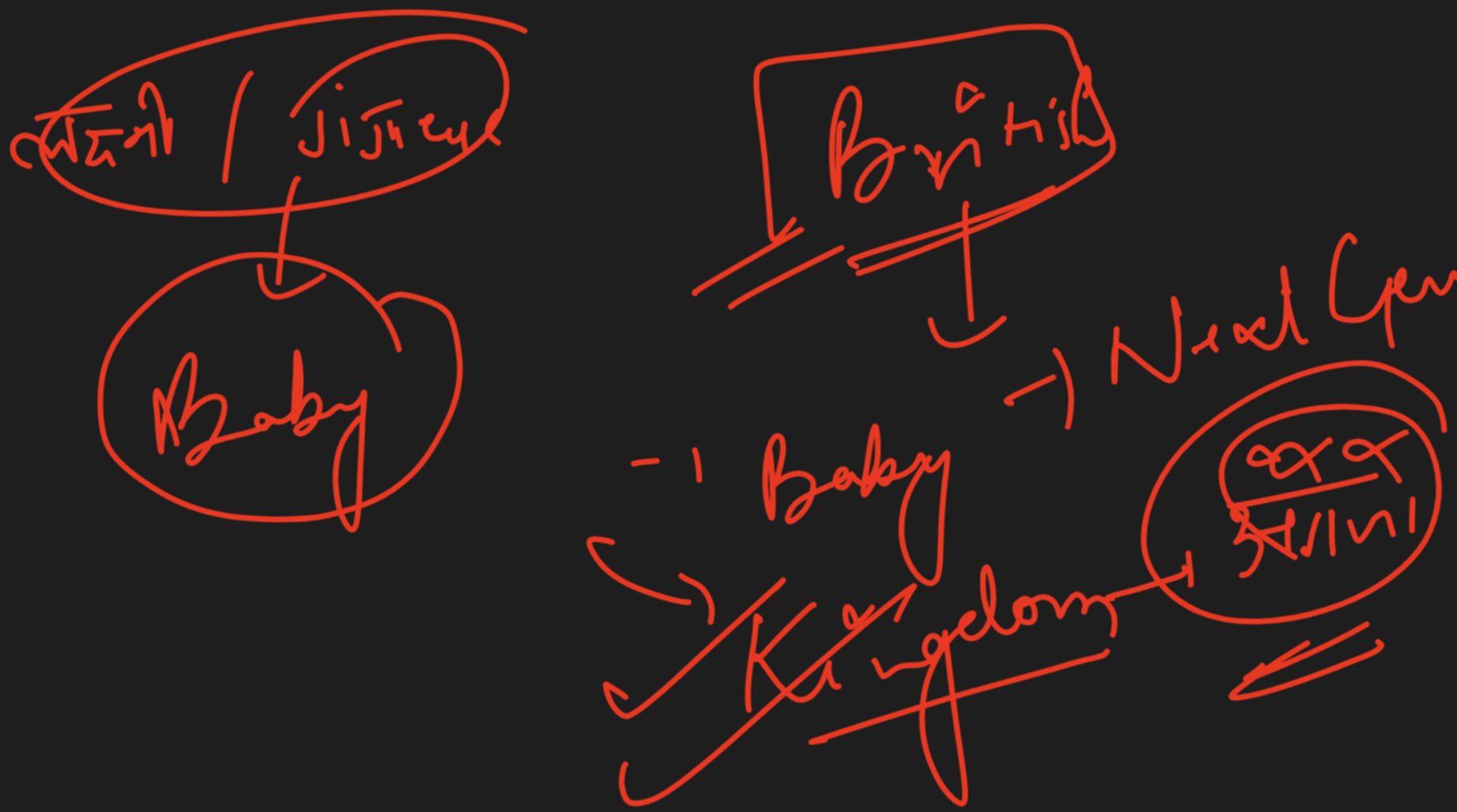
व्याख्या- वीरता की प्रतीक रानी का विवाह सुख-समृद्धि के प्रतीक झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुआ।राजमहल में खुशियाँ छा गई। बधाई के गीत गाए गए।उनके आने से झांसी में ख़ुशियाँ और सौभाग्य आ गया था। उनकी जोड़ी को शिव-पार्वती और अर्जुन-चित्रा की उपमा दी गई है। बुंदेलखंडवासी हमें उसी की वीरता की कथा सुनाते हैं।

उदित हुआ सौभाग्य, मुदित महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई,
तीर चलाने वाले कर में उसे चूड़ियाँ कब भाई,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई।
निसंतान मरे राजाजी रानी शोक-समानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

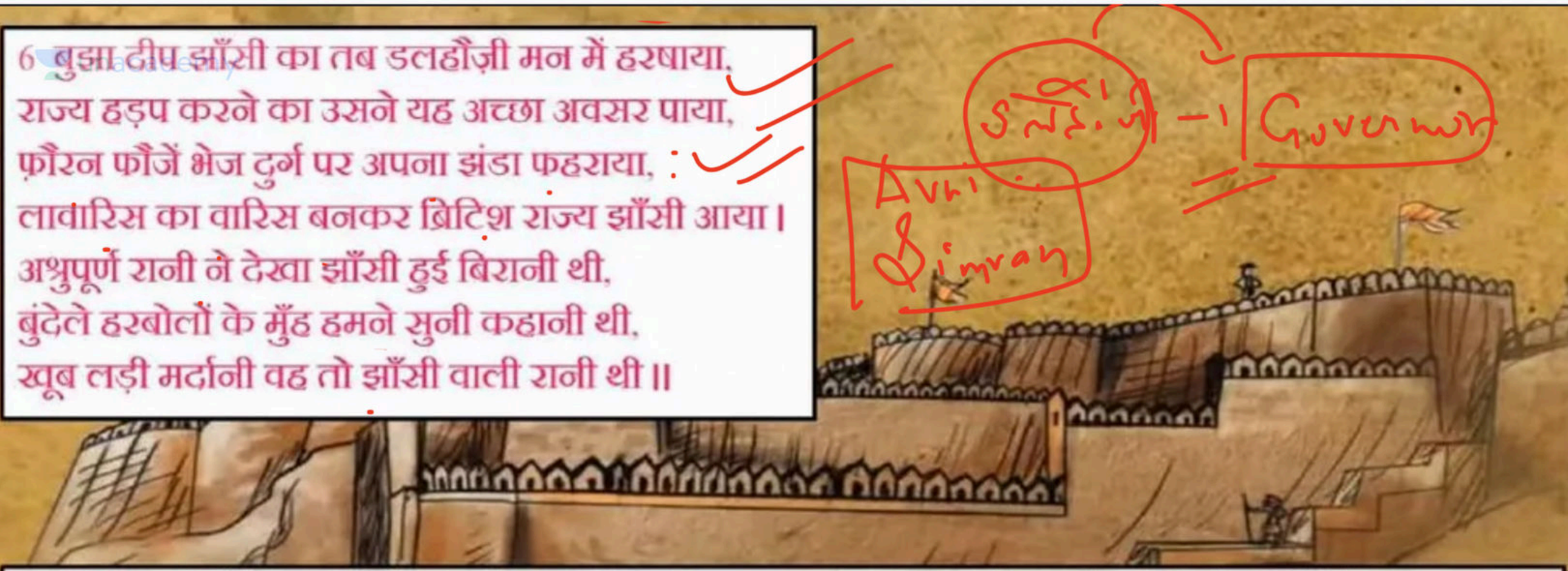


व्याख्या- पति की असमय मृत्यु के बाद रानी अत्यंत दुखी थीं। उनके कोई संतान भी नहीं थी। वे झांसी को संभालने के लिए बिल्कुल अकेली रह गई थीं। अंग्रेज़ों ने यह नीति बना रखी थी कि जिस भी राज्य का राजा संतानहीन हो या कमज़ोर हो उस पर ब्रिटिश सरकार अपना अधिकार कर लेगी। परन्तु रानी ने इसका विरोध किया और उनके आधीन रहना स्वीकार न कर उनसे लड़ना स्वीकार किया।

शब्दार्थ - उदित - उगना । सौभाग्य - खुशहाली । मुदित - प्रसन्न । उजियाली - उजाला । कालगति - समय का चक्र । काली घटा - विपत्ति । कर - हाथ।


Baby
Baby
Baby
Next Generation

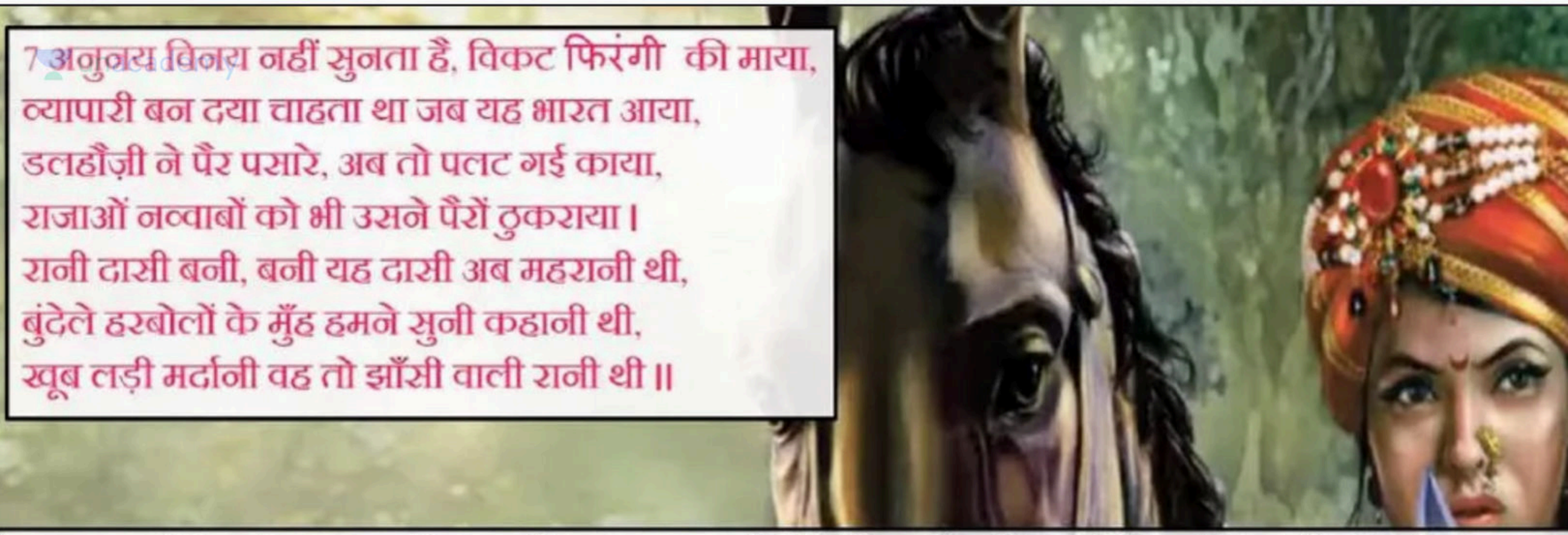
6 बुझा दीप झाँसी का तब डलहौज़ी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने यह अच्छा अवसर पाया,
फ़ौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज्य झाँसी आया।
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई बिरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥



व्याख्या - झांसी के राजा की असमय मृत्यु के बाद उस समय के अंग्रेज़ अधिकारी डलहौजी को झांसी को हड़पने का अच्छा अवसर मिल गया था। झांसी को शोक में डूबा देखकर अंग्रेजों ने कुटिल चाल चली और झांसी पर चढ़ाई कर दी। रानी ने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया और अंग्रेजों को साफ कह दिया 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी'।

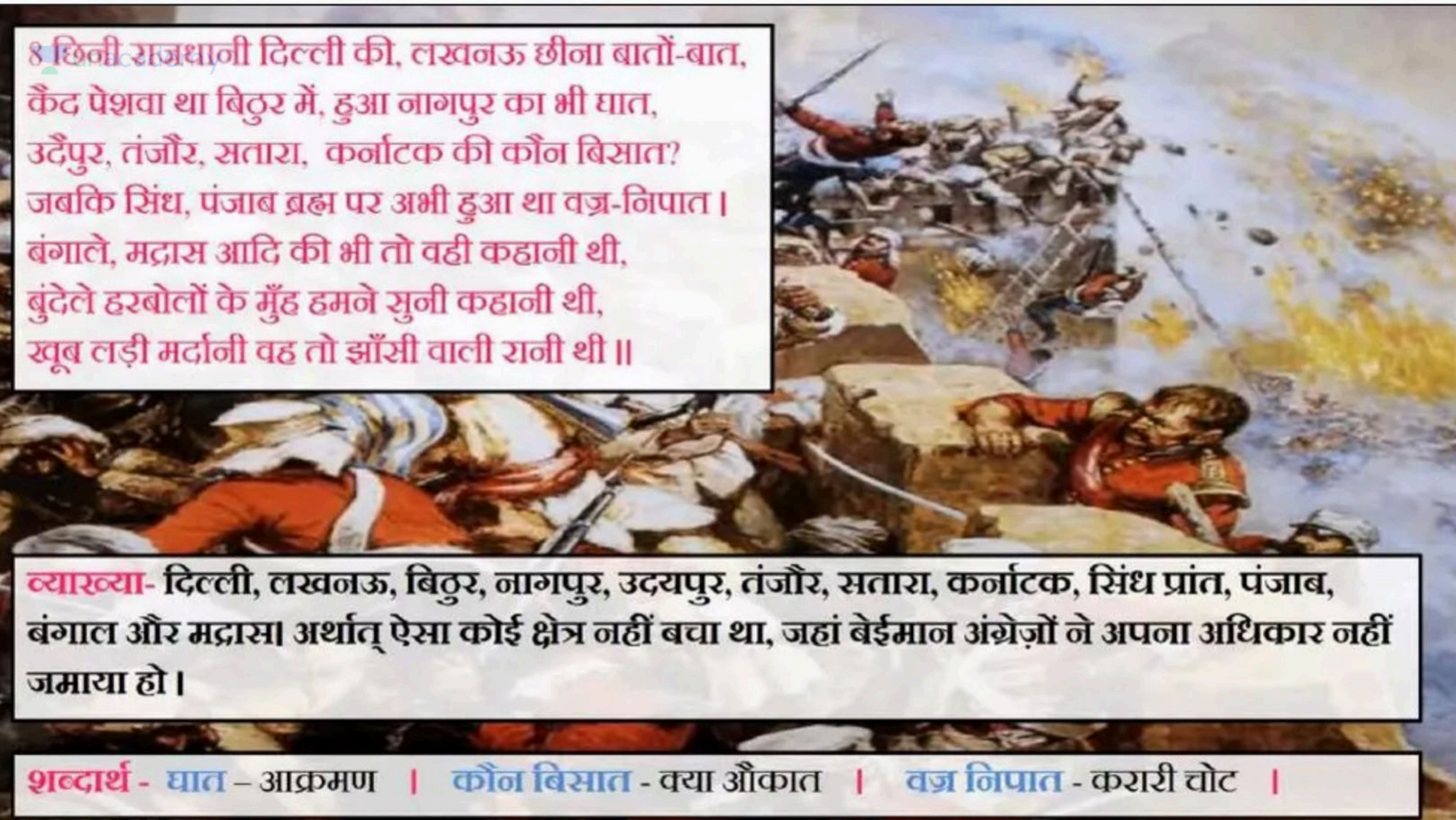
शब्दार्थ - हरषाया - प्रसन्न । अवसर - मौका । अश्रुपूर्ण - आंसुओं सेभरी हुई । बिरानी - सुनसान । वारिस - उत्तराधिकारी ।

7 अनुनय विनय नहीं सुनता है, विकट फिरंगी की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था जब यह भारत आया,
डलहौज़ी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजाओं नव्वाबों को भी उसने पैरों ठुकराया।
रानी दासी बनी, बनी यह दासी अब महरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥



व्याख्या- अंग्रेज़ लोग भारत में व्यापारी बनकर आए थे और फिर धीरे-धीरे उन्होने यहां के सभी बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं और रानियों से दया और सहायता की भीख मांगकर, उनका ही राज्य हड़प लिया था। परंतु लक्ष्मीबाई अन्य राजा-रानियों से विपरीत थीं और उन्होंने विषम परिस्थितियों में भी एक महारानी की तरह झांसी को संभाला।बुंदेलखंडवासी हमें उसी की वीरता की कथा सुनाते हैं।

शब्दार्थ - अनुनय-विनय – प्रार्थना । पैर पसारना - विस्तार करना । काया पलटना - बदलाव आना । विकट - अजीब ।



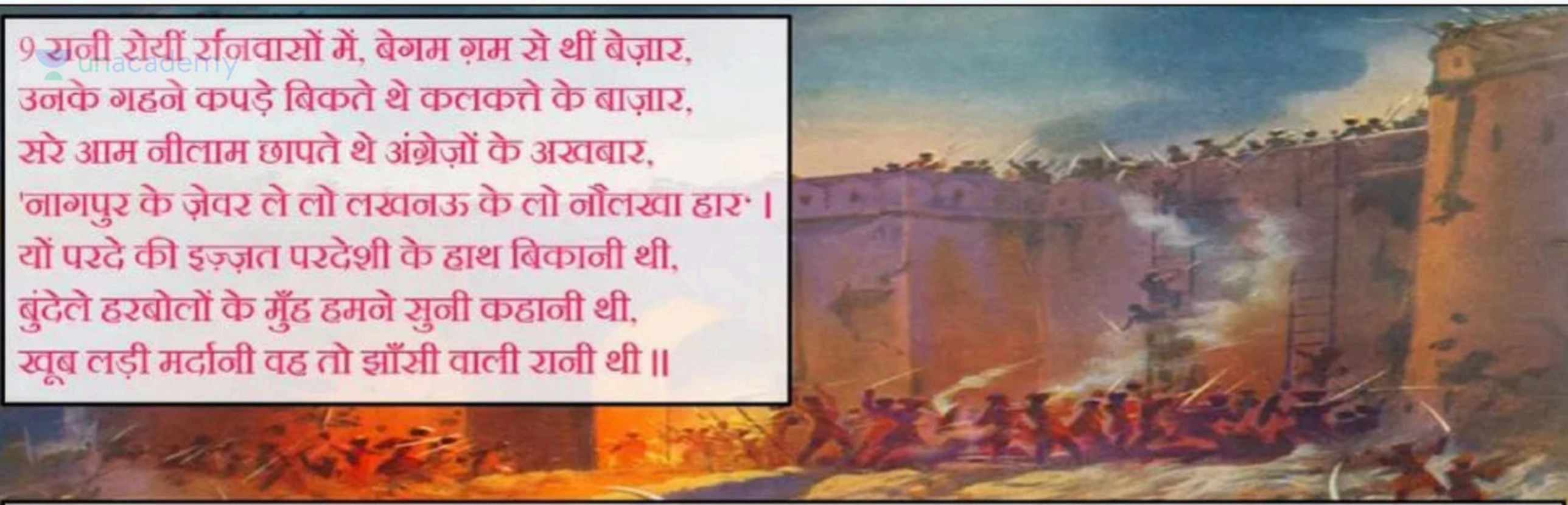
8 छिनी राजधानी दिल्ली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठुर में, हुआ नागपुर का भी घात,
उदैपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक की कौन बिसात?
जबकि सिंध, पंजाब ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र-निपात।
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

व्याख्या- दिल्ली, लखनऊ, बिठुर, नागपुर, उदयपुर, तंजौर, सतारा, कर्नाटक, सिंध प्रांत, पंजाब, बंगाल और मद्रास। अर्थात् ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा था, जहां बेईमान अंग्रेज़ों ने अपना अधिकार नहीं जमाया हो।

शब्दार्थ - घात – आक्रमण | कौन बिसात - क्या औकात | वज्र निपात - करारी चोट |

unacademy

9 सुनी रोयीं रनिवासों में, बेगम ग़म से थीं बेज़ार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाज़ार,
सरे आम नीलाम छापते थे अंग्रेज़ों के अखबार,
'नागपुर के ज़ेवर ले लो लखनऊ के लो नौलखा हार'।
यों परदे की इज़्ज़त परदेशी के हाथ बिकानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥



व्याख्या- इन पंक्तियों में क्रूर अंग्रेज़ों की निर्लज्जता का वर्णन है कि कैसे वे लोग सभी राजाओं तथा नवाबों की हत्या के बाद, वहां के राज्य तो हड़पते ही थे, साथ ही साथ वे उनकी रानियों और बेगमों के इज़्ज़त से भी खिलवाड़ करते थे। चाहे वह लखनऊ की बेगम हों, या कलकत्ता और नागपुर की रानियां। उनके कपड़े और ज़ेवर तक छीन कर नीलाम कर दिए जाते थे और अब उनका अगला कदम झांसी की ओर था।

शब्दार्थ - बेजार – पीड़ित । सरेआम - सबके सामने । नौलखा - बहुमूल्य हार ।

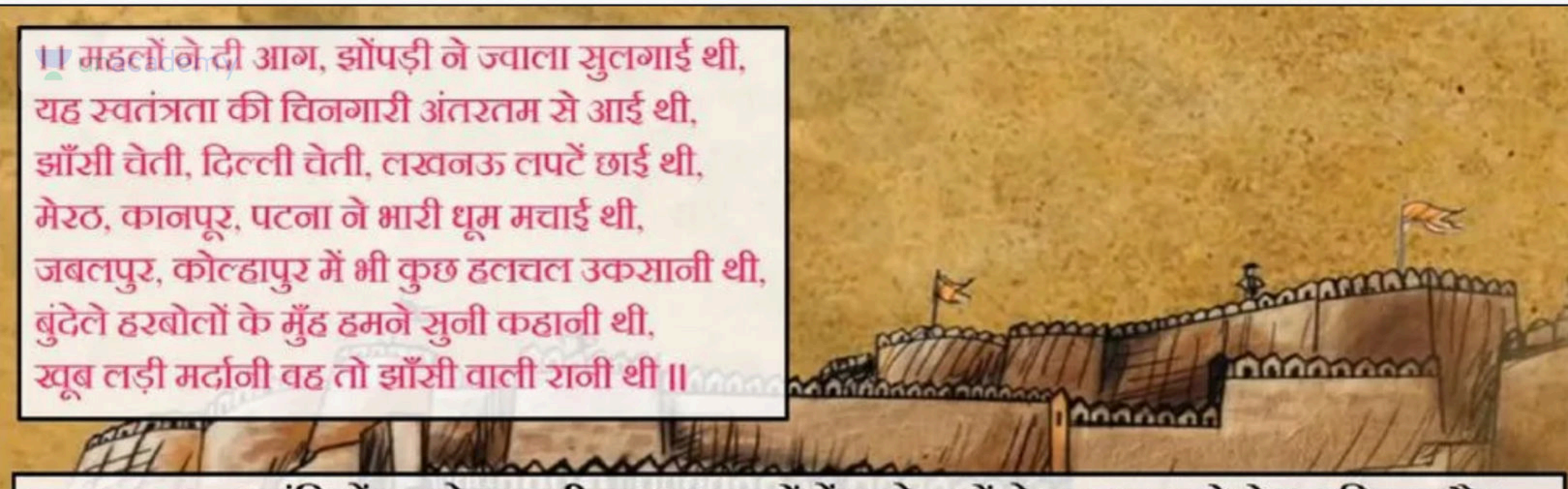


10 कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

व्याख्या - चाहे वो गरीब हो या अमीर, सभी के मन में अंग्रेज़ों के लिए विद्रोह की चिंगारी धधक रही थी। सभी सैनिक नाना साहब, पेशवा जी के नेतृत्व में युद्ध करने को तैयार थे। साथ में उनकी मुंहबोली बहन लक्ष्मीबाई ने भी हार ना मानकर, उनके साथ अंग्रेज़ों से लड़ने का निर्णय कर लिया था। इन पंक्तियों में झाँसी की रानी की वीरता का गुणगान किया गया है।

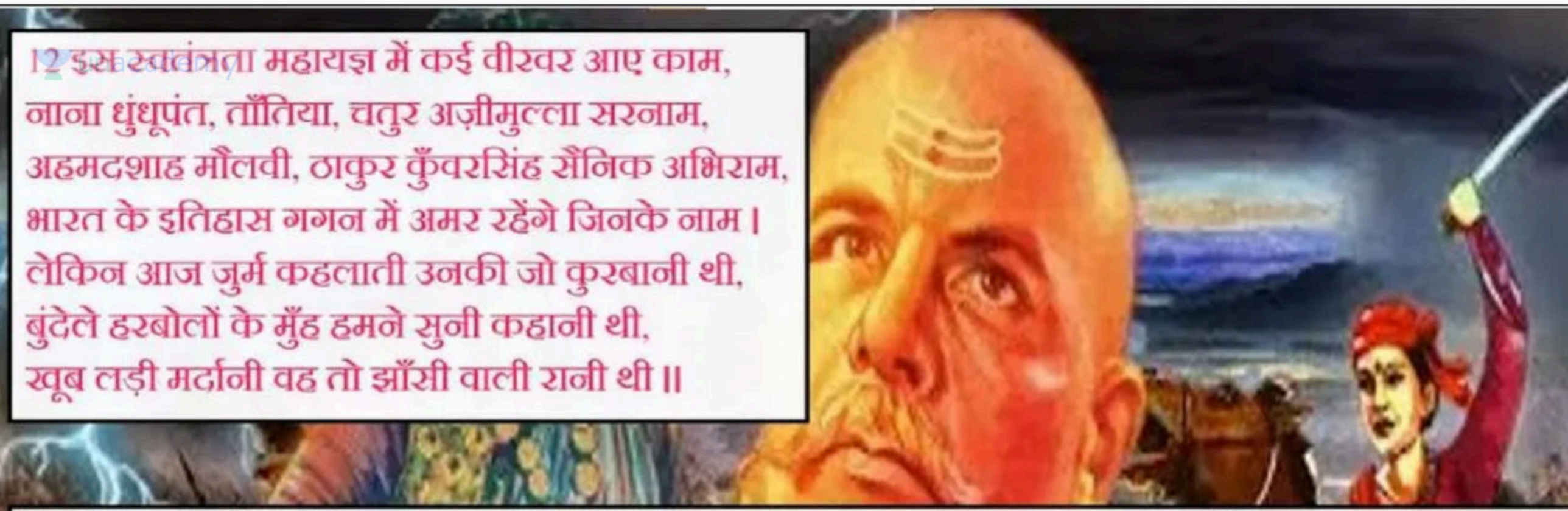
शब्दार्थ - **रणचंडी** - दुर्गा का एक रूप | **आह्वान** - पुकारना | **विषम** – कठिन |

।। महलों ने दी आग, झोंपड़ी ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिनगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थी,
मेरठ, कानपूर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।



व्याख्या- इस क्रांति में पूरा देश भागीदार था। महलों में रहनेवालों ने इस आग को रोशन किया और झोपड़ी मेंरहनेवालों ने इसकी लपटों को तेज किया। स्वतंत्रता की राह की चिंगारी देशवासियों के हृदय से आई थी। क्रांति की इस लहर ने झाँसी और दिल्ली को सावधान कर दिया। लखनऊ को भी इसने लपेटे में ले लिया। मेरठ, कानपुरऔर पटना में भी क्रांति की धूम थी। जबलपुर और कोल्हापुर में भी कुछ चिंगारियाँ भड़क रही थीं। यह कहानी हमने बुंदेलों के मुँह से सुनी है। इस क्रांति में झाँसी की रानी ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था ।

शब्दार्थ - चेती - जाग्रत हो गई । लपटें छाना - भयंकर रूप से फैल जाना। उकसाना - प्रेरित करना ।



12 इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत, ताँतिया, चतुर अज़ीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम।
लेकिन आज जुर्म कहलाती उनकी जो कुरबानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

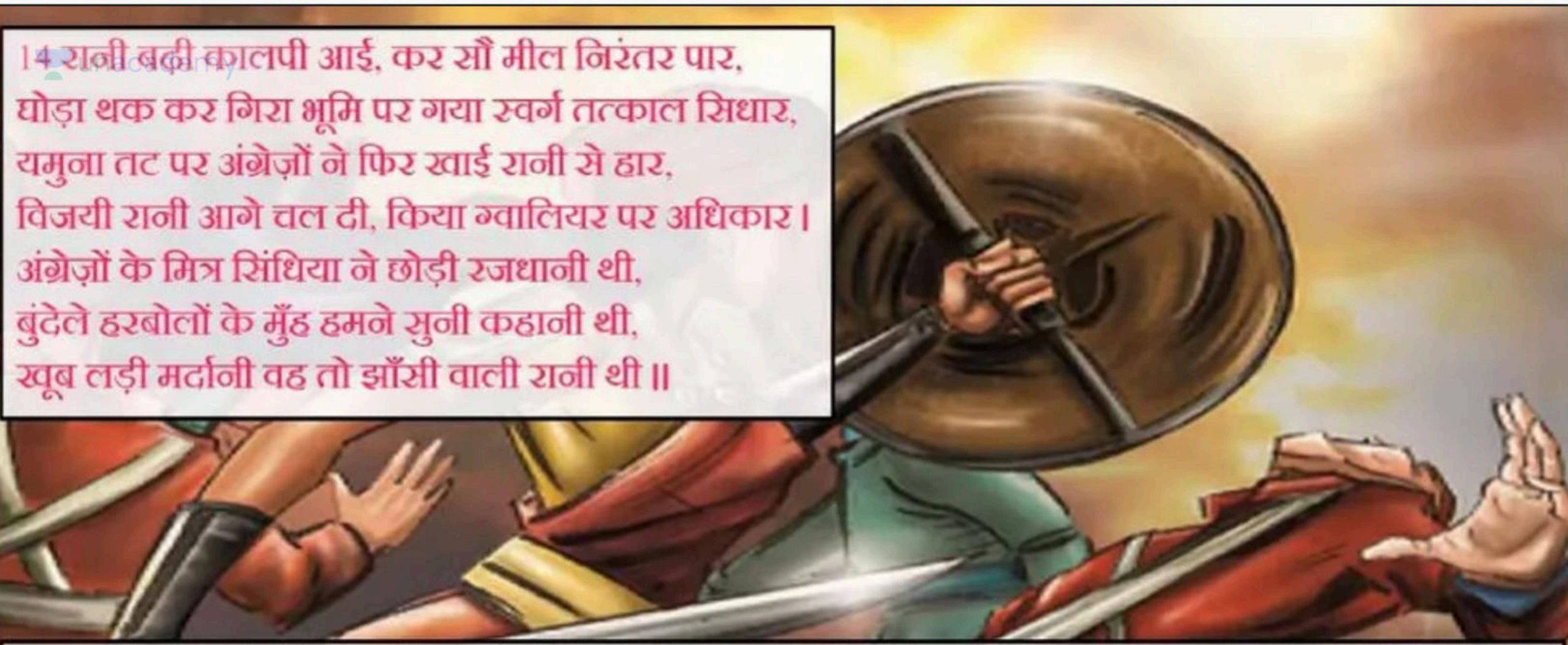
व्याख्या- स्वतंत्रता के इस महान एवं पुनीत कार्य में कई बहादुर शहीद हुए। इनमें नाना धुंधपंत, ताँतिया और चतुरअजीमुल्ला प्रसिद्ध हैं। साथ ही अहमदशाह, मौलवी और ठाकुर कुँवर सिंह जैसे आज़ादी के वीर सिपाहियों के नामभी भारत के इतिहास में हमेशा अमर रहेंगे, परंतु इनका यह बलिदान उस समय अंग्रेज़ों की नज़र में अपराध था। बुंदेले हमें वह कथा सुनाते हैं जिसमें रानी लक्ष्मीबाई मर्दाने रूप में अंग्रेज़ों से डटकर लड़ी थी।

शब्दार्थ - अभिराम – सुन्दर ।



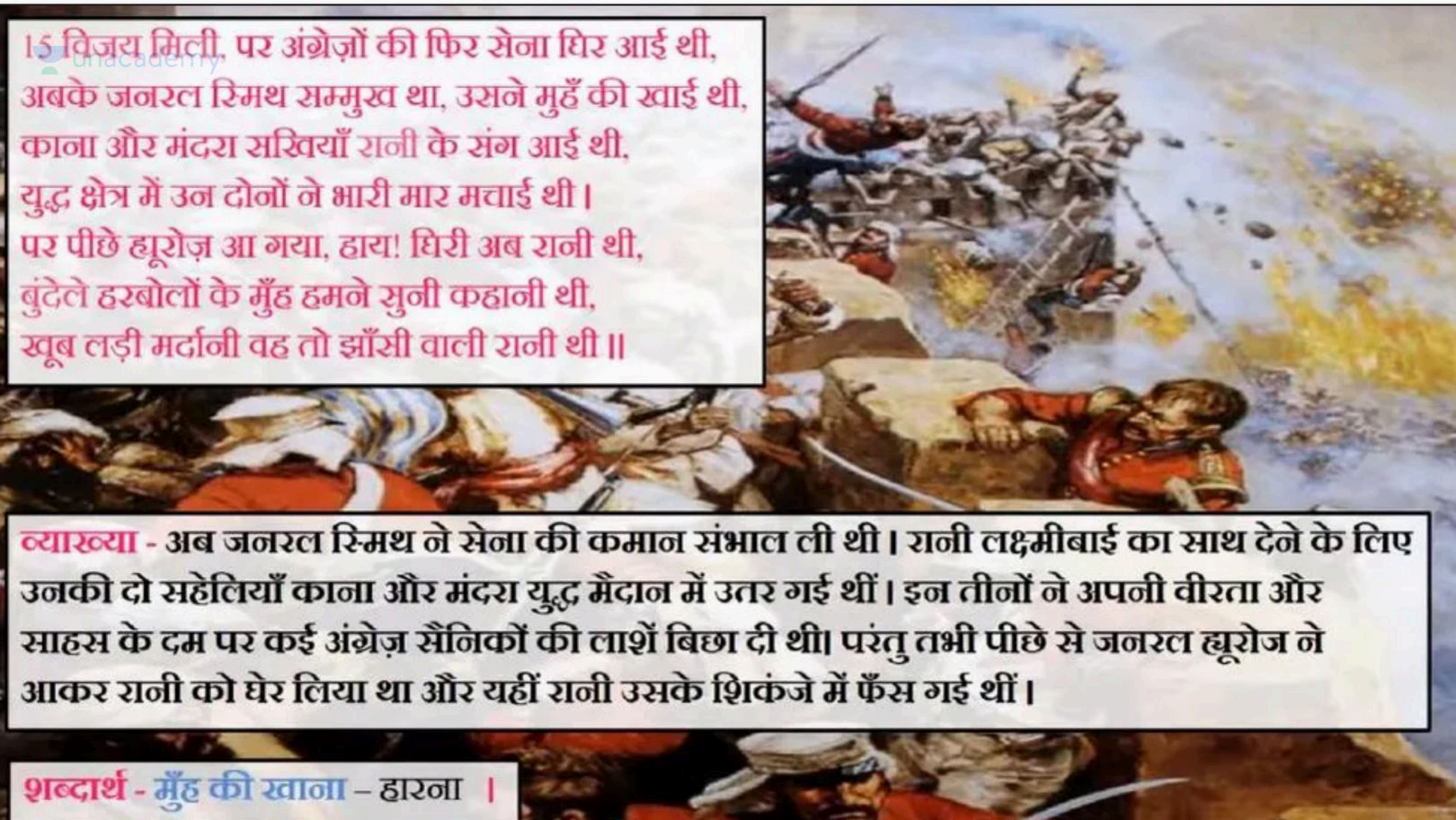
13 इनकी आशा छोड़, चले हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टिनेंट वाकर आ पहुँचा, आगे बड़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुया द्वन्द्व असमानों में।
ज़ख्मी होकर वाकर भागा, उसे अजब हैरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

व्याख्या - झांसी में हुए युद्ध में जब लेफ्टिनेंट वॉकर अंग्रेज़ों की तरफ से युद्ध करने आए, तो उनसे लड़ने के लिए अकेली झांसी की रानी ही काफी थीं। उन्होंने दोनों हाथों में तलवारें लेकर रण-चंडी की तरह वॉकर पर प्रहार किया। इस प्रहार से वो बुरी तरह ज़ख़्मी हो गया तथा रानी के शौर्य बल से वह भी अचंभित रह गया।



14 रानी बढ़ी कालपी आई, कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थक कर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेज़ों ने फिर खाई रानी से हार,
विजयी रानी आगे चल दी, किया ग्वालियर पर अधिकार।
अंग्रेज़ों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

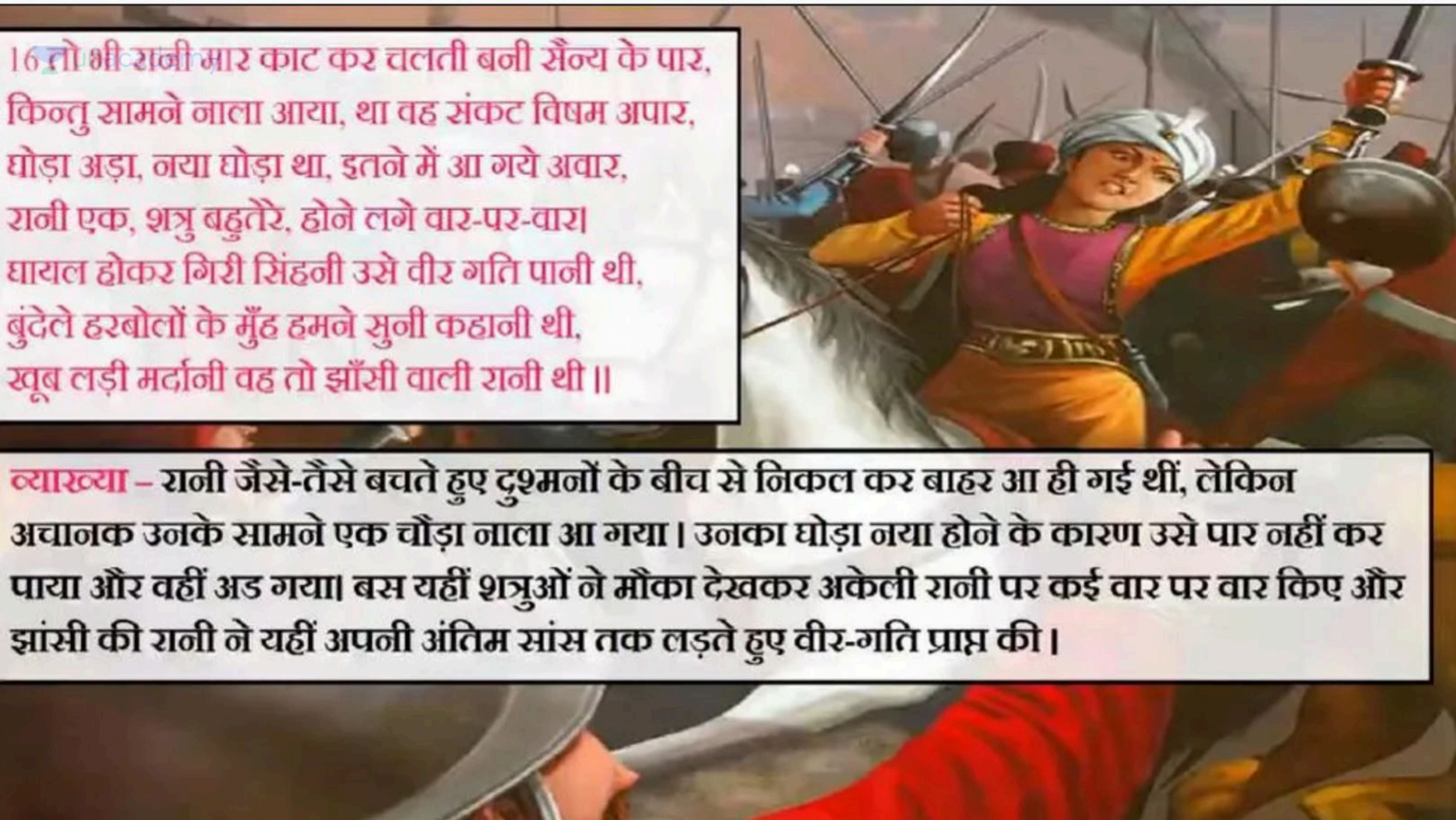
व्याख्या – रानी झाँसी लगातार सौ मील की यात्रा करके कालपी आ गई। इतना सफ़र करने के कारण उनका घोड़ा थककर धरती पर गिर पड़ा और तुरन्त मर गया। वहाँ यमुना के किनारे फिर अंग्रेज़ रानी से हार गए। कालपी जीतकर रानी फिर आगे बढ़ी और उसने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया। ग्वालियर का राजा सिंधिया अंग्रेज़ों का मित्र था। उसे रानी से पराजित होकर राजधानी छोड़नी पड़ी।



15 विजय मिली, पर अंग्रेज़ों की फिर सेना घिर आई थी,
अबके जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुहँ की खाई थी,
काना और मंदरा सखियाँ रानी के संग आई थी,
युद्ध क्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी।
पर पीछे ह्यूरोज़ आ गया, हाय! घिरी अब रानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी॥

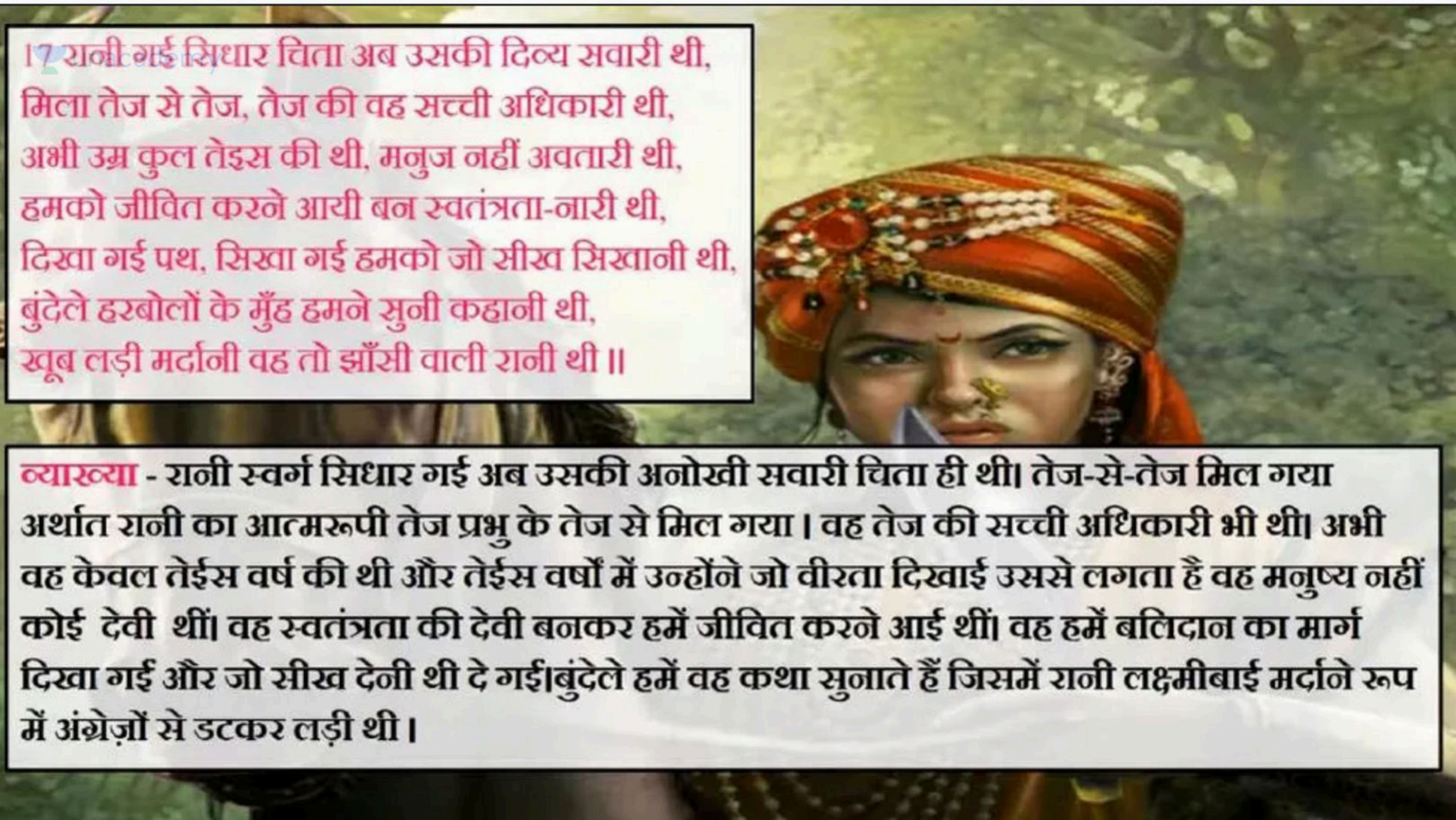
व्याख्या - अब जनरल स्मिथ ने सेना की कमान संभाल ली थी। रानी लक्ष्मीबाई का साथ देने के लिए उनकी दो सहेलियाँ काना और मंदरा युद्ध मैदान में उतर गई थीं। इन तीनों ने अपनी वीरता और साहस के दम पर कई अंग्रेज़ सैनिकों की लाशें बिछा दी थी। परंतु तभी पीछे से जनरल ह्यूरोज ने आकर रानी को घेर लिया था और यहीं रानी उसके शिकंजे में फँस गई थीं।

शब्दार्थ - मुँह की खाना – हारना ।



16 तो भी रानी मार काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किन्तु सामने नाला आया, था वह संकट विषम अपार,
घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गये अवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार-पर-वार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीर गति पानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ॥

व्याख्या – रानी जैसे-तैसे बचते हुए दुश्मनों के बीच से निकल कर बाहर आ ही गई थीं, लेकिन अचानक उनके सामने एक चौड़ा नाला आ गया। उनका घोड़ा नया होने के कारण उसे पार नहीं कर पाया और वहीं अड गया। बस यहीं शत्रुओं ने मौका देखकर अकेली रानी पर कई वार पर वार किए और झांसी की रानी ने यहीं अपनी अंतिम सांस तक लड़ते हुए वीर-गति प्राप्त की।

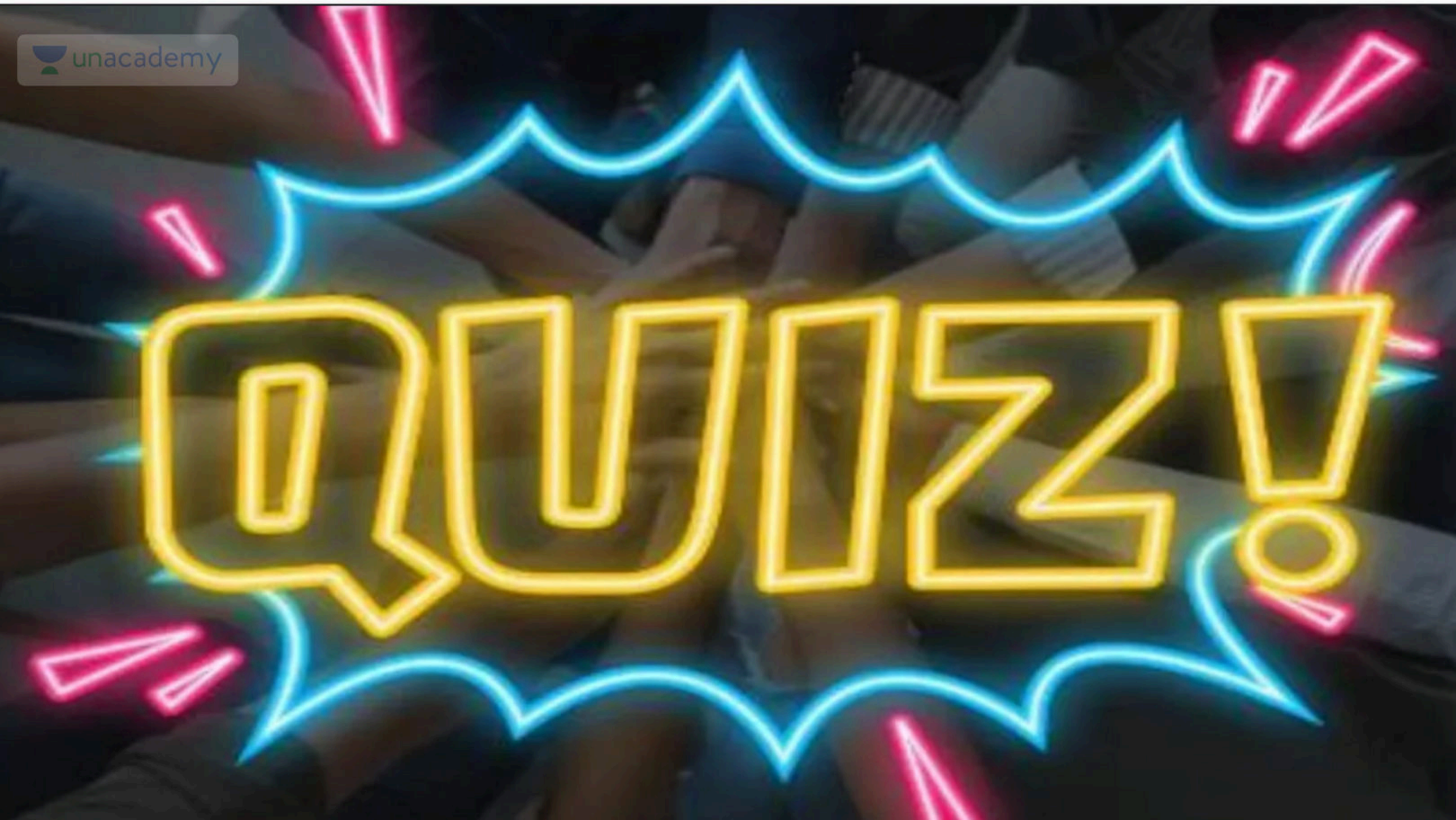


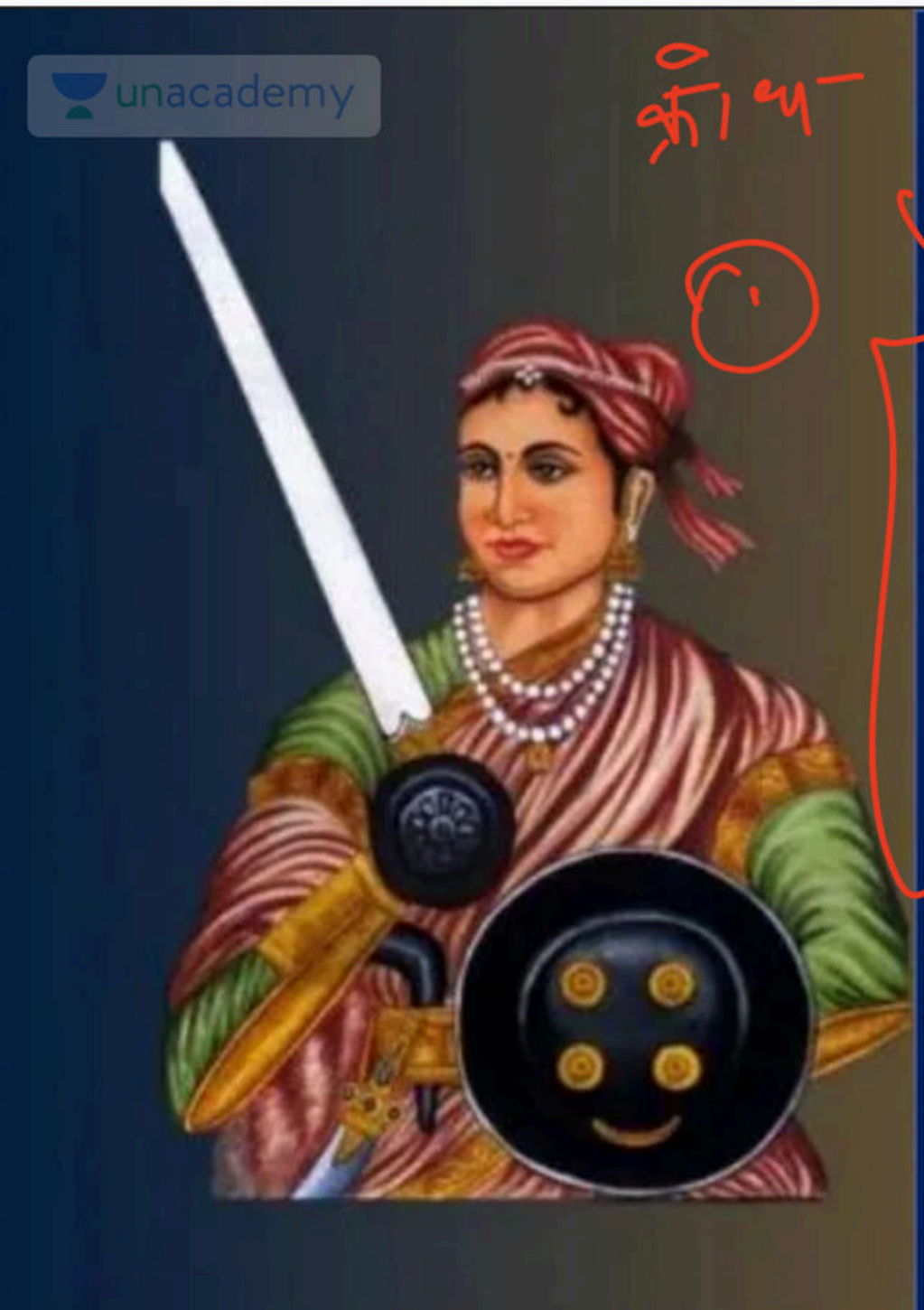
।7 रानी गई सिधार चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेइस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आयी बन स्वतंत्रता-नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई हमको जो सीख सिखानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी ।।

व्याख्या - रानी स्वर्ग सिधार गई अब उसकी अनोखी सवारी चिता ही थी। तेज-से-तेज मिल गया अर्थात रानी का आत्मरूपी तेज प्रभु के तेज से मिल गया । वह तेज की सच्ची अधिकारी भी थी। अभी वह केवल तेईस वर्ष की थी और तेईस वर्षों में उन्होंने जो वीरता दिखाई उससे लगता है वह मनुष्य नहीं कोई देवी थीं। वह स्वतंत्रता की देवी बनकर हमें जीवित करने आई थीं। वह हमें बलिदान का मार्ग दिखा गई और जो सीख देनी थी दे गई।बुंदेले हमें वह कथा सुनाते हैं जिसमें रानी लक्ष्मीबाई मर्दाने रूप में अंग्रेज़ों से डटकर लड़ी थी ।



व्याख्या- कवयित्री रानी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहती हैं कि हम तुम्हारे इस उपकार को सदैव याद रखेंगे। तुम्हारा बलिदान कभी न मिटने वाली स्वतंत्रता की भावना को जन्म देगा। भले ही इतिहास मेंतुम्हारे विषय में कुछ न लिखा जाए, तुम्हारी सच्चाई को मिटाने के प्रयास किए जाएँ, विजय में मस्त अंग्रेज़ भले ही गोलों से झाँसी का निशान मिटा दें लेकिन तू स्वयं कभी न मिटने वाली निशानी है। तेरा कोई स्मारक बने या न बने, तू स्वयं ही अपना स्मारक है क्योंकि तेरी वीरता और तेरी गाथा अतुलनीय है। लक्ष्मीबाई की वीरता की यह कथा हमने बुंदेलों के मुँह से सुनी है।

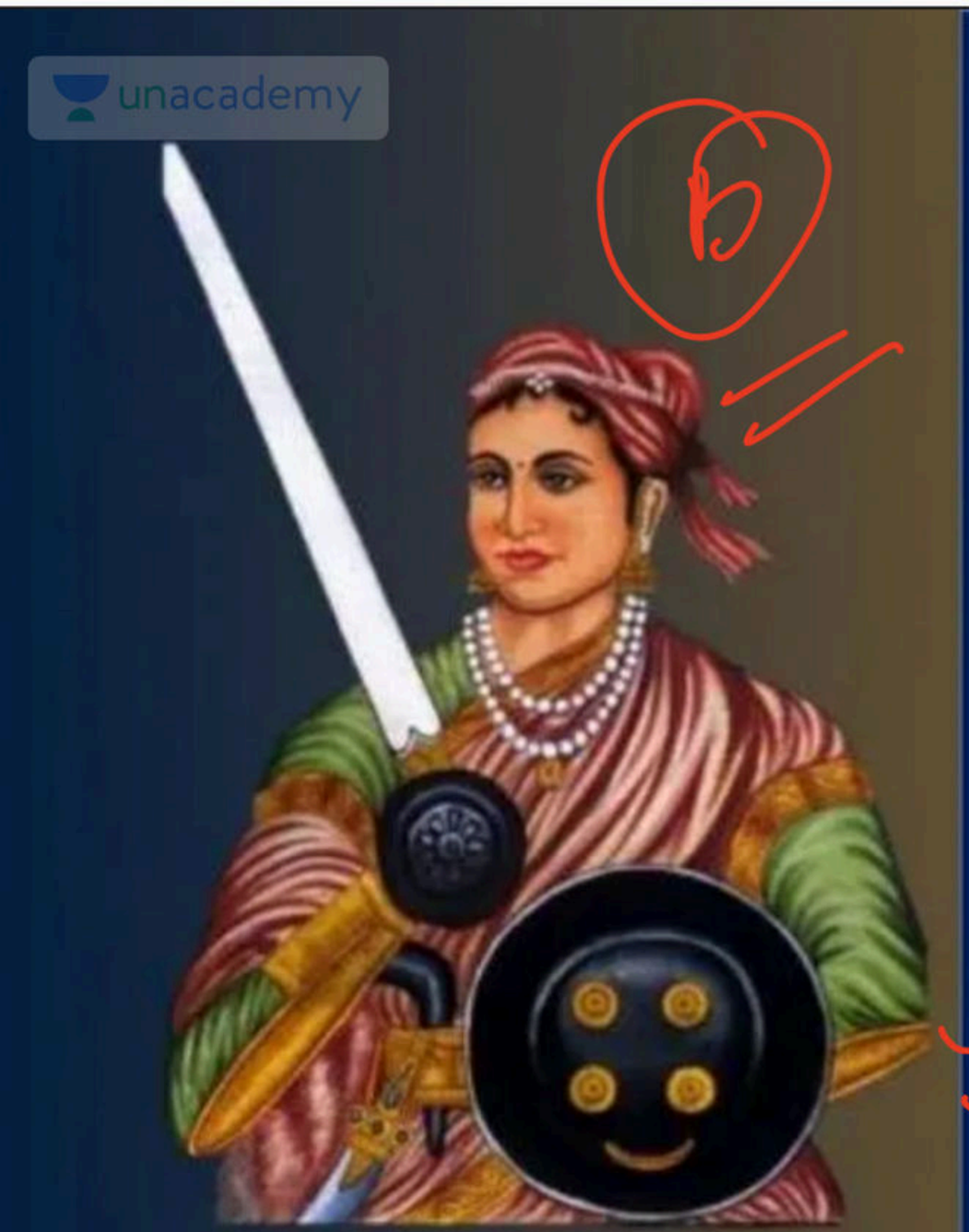

unacademy
QUIZ!



1. 'झाँसी की रानी' कविता में किसने भृकुटी तानी थी?

1. अंग्रेजों ने
2. झाँसी की रानी ने
3. अर्जुन ने
4. राजवंशों ने

unacademy



2. 'झांसी की रानी' कविता के माध्यम से सुभद्रा कुमारी चौहान ने किसमें फिर से नई जवानी आने की बात कही है?

1. अंग्रेजों में
2. कानपुर के नाना में
3. बूढ़े भारत में
4. अर्जुन में

unacademy

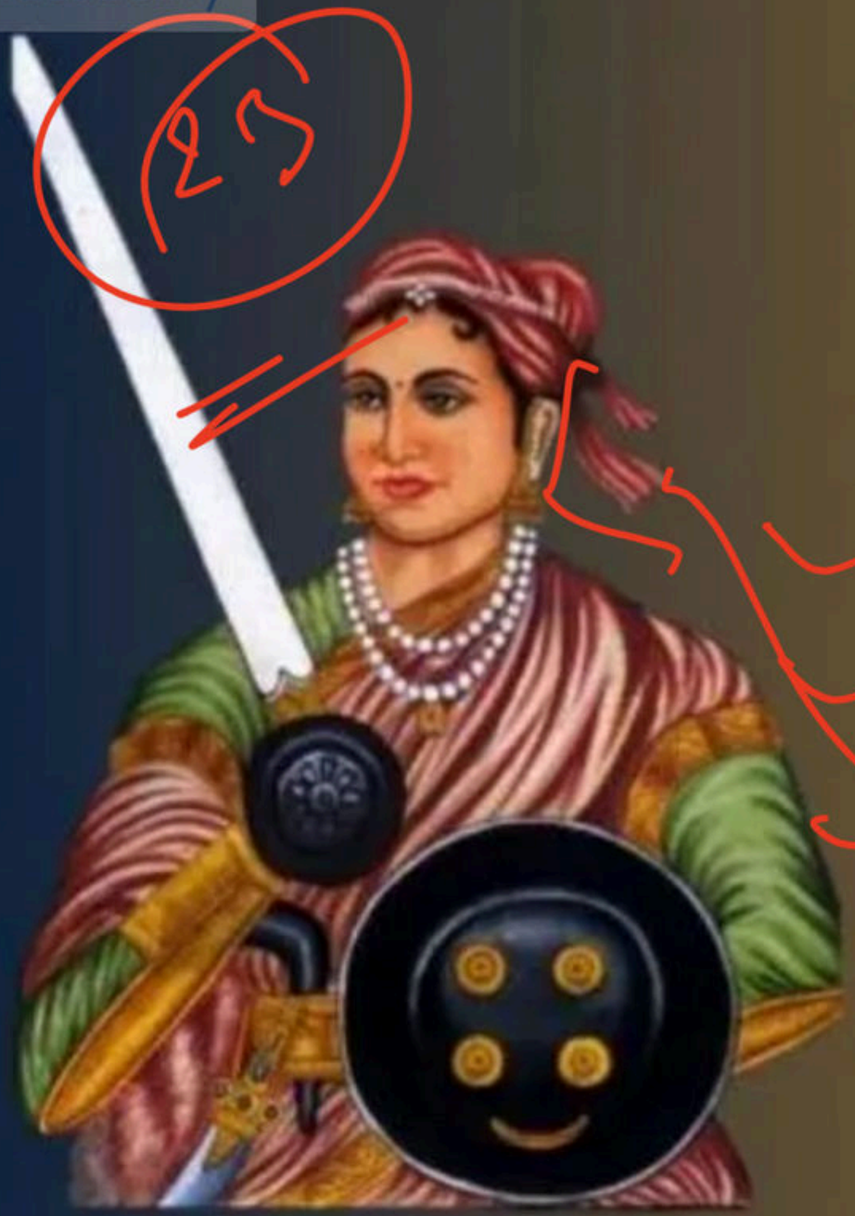


3. 'झाँसी की रानी' कविता में मर्दानी कौन थी?

1. चित्रा
2. झाँसी वाली रानी
3. कृपाण
4. बरछी

b

unacademy



4. कानपुर के नाना की मुँहबोली बहन कौन थी?

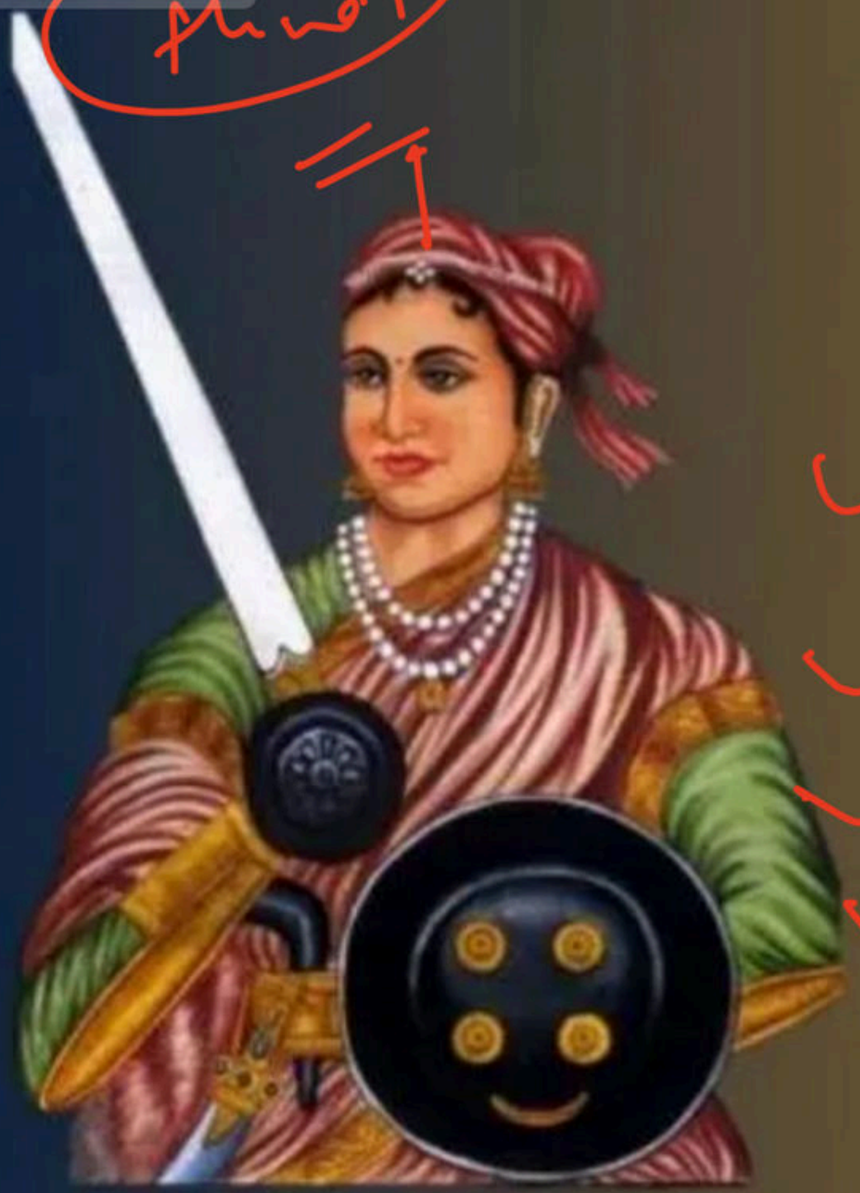
1. चित्रा
2. कुलदेवी
3. छबीली
4. इनमें से कोई नहीं

unacademy



5. 'छबीली' किसका नाम था?

1. दुर्गा
2. रानी लक्ष्मीबाई
3. चित्रा
4. कुलदेवी



6. रानी लक्ष्मीबाई बचपन में किसके साथ पढ़ती और खेलती थी?

1. नाना
2. अर्जुन
3. शिवाजी
4. दुर्गा



7. रानी लक्ष्मीबाई की सहेली कौन थी?

1. बरछी
2. ढाल-कृपाण
3. कटारी
4. उपर्युक्त सभी



8. वीर शिवाजी की गाथाएँ किसको जुबानी याद थी?

1. चित्रा को
2. अर्जुन को
3. कानपुर के नाना को
4. झाँसी वाली रानी को

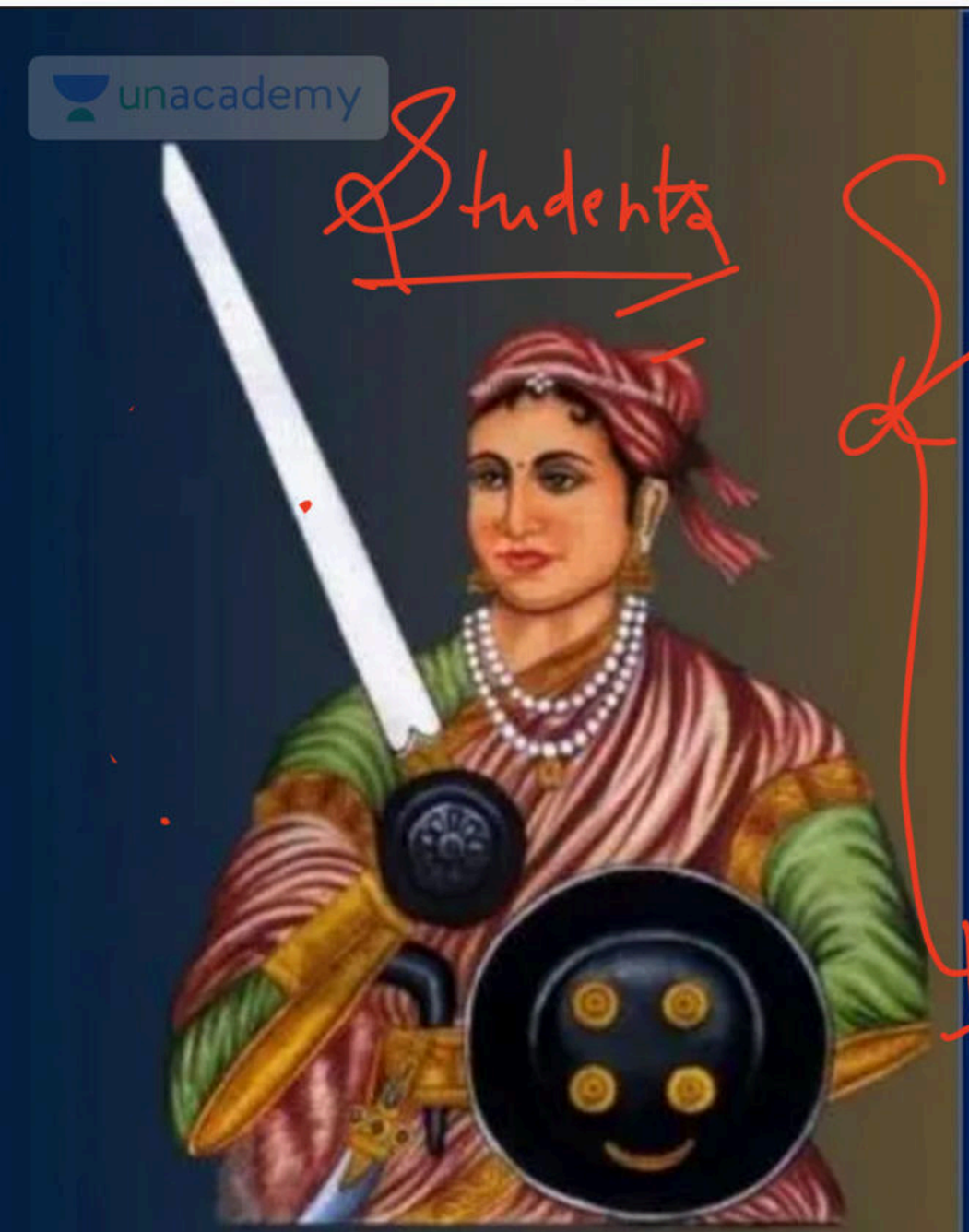
unacademy



9. रानी लक्ष्मीबाई का प्रिय खेल कौन-सा था?

1. नकली युद्ध
2. व्यूह की रचना और शिकार खेलना
3. दुर्ग तोड़ना
4. उपर्युक्त सभी

unacademy



10. झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की आराध्य भवानी कौन थी?

1. लक्ष्मी
2. दुर्गा
3. चित्रा
4. महाराष्ट्र-कुल-देवी

unacademy



11. तीर चलाने वाले हाथों में रानी लक्ष्मीबाई को क्या नहीं भाती थी?

1. तलवार
2. चूड़ियाँ
3. बरछी
4. ढाल

unacademy



12. चित्रा की शादी किसके साथ हुई थी?

1. अर्जुन
2. शिव
3. कानपुर के नाना
4. अंग्रेजों

unacademy



13. निःसंतान कौन मर गए थे?

1. कानपुर के नाना
2. वीर शिवाजी
3. झाँसी के राजा
4. अर्जुन

unacademy



14. झाँसी के राजा की मृत्यु के पश्चात कौन मन ही मन खुश हुआ?

1. अर्जुन
2. वीर शिवाजी
3. डलहौजी
4. कानपुर का नाना

unacademy



15. झाँसी के राजा के मरने के पश्चात डलहौजी मन ही मन क्यों खुश हुआ?

1. क्योंकि उसे राज्य हड़प करने का अच्छा अवसर मिल गया
2. क्योंकि वह भारत छोड़कर जा रहा था
3. क्योंकि वह भारतीयों का साथ दे रहा था
4. इनमें से कोई नहीं

unacademy



16. लावारिस का वारिस बनकर कौन झाँसी आया?

1. महाराष्ट्र-कुल-देव
2. ब्रिटिश राज्य
3. अर्जुन
4. वीर शिवाजी

unacademy



17. व्यापारी बनकर भारत कौन आया था?

1. फिरंगी
2. नाना
3. वीर शिवाजी
4. अर्जुन

unacademy



18. राजधानी दिल्ली, लखनऊ, नागपुर आदि स्थानों पर किसने अपना अधिकार कर लिया था?

1. नाना ने
2. वीर शिवाजी ने
3. अंग्रेजों ने
4. झाँसी की रानी ने

unacademy



19. कलकत्ता के बाजार में किनके गहने-कपड़े बिकते थे?

1. अंग्रेजों के
2. चित्रा के
3. रानी और बेगम के
4. महाराष्ट्र-कुल-देवी के

unacademy



20. किनके मन में अपने पुरखों का अभिमान था?

1. कानपुर के नाना
2. पेशवा
3. वीर सैनिकों
4. अंग्रेजों

unacademy



21. किसने युद्ध में लड़ने का आह्वान कर दिया था?

1. छबीली ने
2. चित्रा ने
3. भवानी ने
4. भारत की प्रत्येक नारी ने

unacademy



22. 'झांसी की रानी' कविता में स्वतंत्रता की चिंगारी कहाँ से उभर कर आई थी?

1. अंग्रेजों से
2. दिल्ली से
3. अंतरमन से
4. लखनऊ से

unacademy



23. भारत के इतिहास-गगन में किनके नाम अमर रहेंगे?

1. नाना धुंधूपंत
2. ताँतियाँ
3. ठाकुर कुँवर सिंह
4. उपर्युक्त सभी

unacademy



24. झाँसी के मैदानों में मर्द बनकर कौन खड़ी है?

1. चित्रा
2. भवानी
3. रानी लक्ष्मीबाई
4. दुर्गा

unacademy



25. किसका घोड़ा थक कर भूमि पर गिर गया और स्वर्ग सिधार गया?

1. नाना धुंधूपंत
2. ठाकुर कुँवर सिंह
3. रानी लक्ष्मीबाई
4. तात्याँ टोपे

unacademy



26. रानी लक्ष्मीबाई से जख्मी होकर कौन भाग गया?

1. डलहौजी
2. वॉकर
3. कुँवर सिंह
4. अर्जुन

unacademy



27. यमुना-तट पर अंग्रेज़ों ने फिर से किससे हार का सामना करना पड़ा?

1. रानी लक्ष्मीबाई
2. कुँवर सिंह
3. धुंधूपंत
4. ताँतिया

unacademy



28. जनरल स्मिथ के साथ युद्ध करते समय रानी लक्ष्मीबाई के साथ उनकी कौन-सी सखियाँ थी?

1. काना और मंदरा
2. चित्रा
3. भवानी
4. कुलदेवी

unacademy



29. झाँसी की रानी अंग्रेजों से लड़ते हुए जा रही थी तब नए घोड़े के सामने क्या आ गया जहाँ से घोड़ा आगे नहीं बढ़ सका?

1. पहाड़
2. नाला
3. जंगल
4. बड़ा मैदान

unacademy



30. 'झाँसी की रानी' कविता में घायल होकर गिरने वाली सिंहनी किसे कहा गया है?

1. चित्रा को
2. भवानी को
3. झाँसी की रानी को
4. दुर्गा को



31. 'झाँसी की रानी' कविता में रानी की मृत्यु के पश्चात उसकी दिव्य सवारी किसे कहा गया है?

1. चिता को
2. घोड़े को
3. तेज रफ्तार को
4. शेर को

unacademy



32. झाँसी की रानी युद्ध के समय कितने वर्ष की थी?

1. 20
2. 25
3. 20
4. 23
5. 30


unacademy
Q
A

unacademy

कविता से

प्रश्न 1क - किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई'
इस पंक्ति में किस घटना की ओर संकेत है?

उत्तर:- इस पंक्ति में झाँसी के राजा और रानी लक्ष्मीबाई के पति गंगाधर राव की आकस्मिक मृत्यु की ओर संकेत किया है।

unacademy

प्रश्न 14 –

किंतु कालगति चुपके-चुपके काली घटा घेर लाई' काली घटा घिरने की बात क्यों कही गई है?

उत्तर:- रानी लक्ष्मीबाई के पति गंगाधर राव की आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण रानी के जीवन में काली घटा घिरने की बात की गई है। राजा की मृत्यु के कारण रानी असमय विधवा हो गई और साथ ही राजा की अपनी संतान न होने के कारण अंग्रेजों को झाँसी पर कब्ज़ा करने का मौका मिल गया था।

unacademy

प्रश्न 2

कविता की दूसरी पंक्ति में भारत को 'बूढा' कहकर और उसमें 'नई जवानी' आने की बात कहकर सुभद्रा कुमारी चौहान क्या बताना चाहती हैं?

उत्तर:- हमारे भारत वर्ष के गुलाम होने के कारण एक तरह से चारों ओर मायूसी वाला वातावरण बन गया था। भारतीय वीरों का साहस कमजोर हो गया था। सभी अपने को असहाय महसूस करने लगे थे। ऐसा लगता था मानो सारा देश ही बूढ़ा हो गया है

unacademy

परन्तु ऐसे बोझिल वातावरण में झाँसी की रानी के आने से देश में एक नए उमंग का वातावरण बन गया। लोगों में संघर्ष की नई भावना जागृत हुई। एक बार लोग पुन: स्वतंत्रता प्राप्ति की ओर प्रयत्न करने लगे। यही बात सुभद्राकुमारी चौहान उपर्युक्त पंक्ति द्वारा बताना चाहती है।

unacademy

प्रश्न 2.

झाँसी की रानी के जीवन की कहानी अपने शब्दों में लिखो और यह भी बताओ कि उनका बचपन तुम्हारे बचपन से कैसे अलग था?

उत्तर:- झाँसी की रानी का नाम लक्ष्मीबाई था। बचपन में उन्हें छबीली नाम से पुकारा करते थे। वे अपने पिता की एकलौती संतान थी। वे कानपूर के नाना साहेब की मुँहबोली बहन थी। लक्ष्मीबाई बचपन से ही वीर और साहसी थी। लक्ष्मीबाई का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव से हुआ।

unacademy

परन्तु राजा की आकस्मिक मृत्यु से रानी के ऊपर संकटों के बादल लहराने लगे। अँग्रेज सरकार राजा की नि:संतानता का लाभ उठाकर झाँसी पर कब्ज़ा करना चाहते थे परन्तु रानी ने इसका पुरजोर विरोध किया और अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी।

unacademy

लक्ष्मीबाई का बचपन अन्य बच्चों से बहुत ही भिन्न था। उनकी उम्र के बच्चे खिलौने से खेलते थें परन्तु उनके खिलौने बरछी, ढाल, कृपाण जैसे हथियारों थे। वे बचपन से ही नकली युद्ध का खेल, शिकार करना, दुश्मनों के लिए चक्रव्यूह की रचना करना आदि युद्ध से संबंधित खेल ही खेला करती थी।

इस प्रकार उनका बचपन हम बच्चों से भिन्न था।

unacademy

प्रश्न 4-

वीर महिला की इस कहानी में कौन-कौन से पुरुषों के नाम आए हैं?

उत्तर:- इस कहानी में वीर शिवाजी, नाना धुंधूपंत, पेशवा, तातियाँ, अजीमुल्ला, अहमद शाह मौलवी, ठाकुर कुँवरसिंह, सैनिक अभिराम आदि अनेक वीर पुरुषों के नाम आए हैं।

unacademy

अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1-

कविता में किस दौर की बात है? कविता से उस समय के माहौल के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर:- कविता में स्वाधीनता संग्राम के प्रथम दौर की बात है।कविता में वर्ष 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौर की बात कही गई है। इस संग्राम में झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उस समय के माहौल के बारे में यह पता चलता है कि देश गुलाम था और लोगों के दिलों में देशप्रेम की ज्वाला भड़क रही थी।

unacademy

वे आजादी पाने के लिए लालायित थे। लेकिन संघटन का अभाव, राजाओं की स्वार्थ प्रवृत्ति, आपसी फूट आदि के कारण हमारा आंदोलन सफल न हो पाया। ऐसे विषम वातावरण में भी झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई और कुछ अन्य वीरों ने स्वतंत्रता की चिंगारी को सुलगाने का अभूतपूर्व प्रयास किया।

unacademy

प्रश्न 2:- सुभद्रा कुमारी चौहान लक्ष्मीबाई को 'मर्दानी' क्यों कहती हैं?

उत्तर:- झाँसी की रानी एक महिला होते हुए भी उनमें पुरुषोचित गुण साहस, वीरता, युद्ध कला में निपुणता निडरता आदि गुण विद्यमान थे। उन्होंने युद्ध भूमि में अंग्रेजों के दाँत खट्टे कर दिए थे उनकी वीरता का लोहा भारतवासियों के साथ अंग्रेजों ने भी माना था। अत: सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई के इसी अभूतपूर्व साहस, शौर्य तथा वीरता का परिचय कराने के लिए 'मर्दानी'शब्द का प्रयोग किया है।

unacademy

खोजबीन

प्रश्न 1-

बरछी', 'कृपाण', 'कटारी' उस ज़माने के हथियार थे। आजकल प्रयोग में लाए जाने वाले हथियारों के नाम लिखो।

उत्तर:- आजकल अति आधुनिक हथियारों जैसे तकनीकी क्षमता से सुसज्जित बंदूकें, टैंक, तोप, मिसाइल, परमाणु अस्त्र आदि हथियारों का प्रयोग किया जाता है।

unacademy

प्रश्न 2-

लक्ष्मीबाई के समय में ज़्यादा लड़कियाँ 'वीरांगना' नहीं हुई क्योंकि लड़ना उनका काम नहीं माना जाता था। भारतीय सेना में अब क्या स्थिति है? पता करो।

उत्तर:- आज हमारी भारतीय सेना के तीनों सैन्य दल जल, थल और वायु सेना में हमें लड़कियाँ दिखाई देती है। आज वे इन सेनाओं के उच्च पदों पर कार्यरत हैं। इस सबके बावजूद अभी भी सेना में लड़कियों की संख्या बहुत कम है।

unacademy

प्रश्न 1. भाषा की बात

नीचे लिखे वाक्यांशों (वाक्य के हिस्सों) को पढ़ो-

झाँसी की रानी	मिट्टी का घरौंदा	प्रेमचंद की कहानी
पेड़ की छाया	ढाक के तीन पात	नहाने का साबुन
मील का पत्थर	रेशमा के बच्चे	बनारस के आम

का, के और की दो संज्ञाओं का संबंध बताते हैं। ऊपर दिए गए वाक्यांशों में अलग-अलग जगह इन तीनों का प्रयोग हुआ है। ध्यान से पढ़ो और कक्षा में बताओ कि का, के और की का प्रयोग कहाँ और क्यों हो रहा है?

unacademy

-

उत्तर –

का, के और की संबंध कारक के चिह्न हैं। इन्हें परसर्ग भी कहते हैं। इनका प्रयोग संज्ञा के अनुसार होता है। स्त्रीलिंग संबंधी संज्ञा के पूर्व 'की पुल्लिंग संबंधी संज्ञा के पूर्व 'का' और बहुवचन पुल्लिंग संबंधी संज्ञा के पूर्व 'के' का प्रयोग होता है।

unacademy

का' का प्रयोग – एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ हुआ है।

मिट्टी का घरौंदा – घरौंदा एकवचन पुल्लिंग है। घरौंदे का संबंध मिट्टी से बताने के लिए का प्रयोग हुआ है।

मील का पत्थर – पत्थर पुल्लिंग है और एकवचन है, इसलिए उससे पहले 'का' प्रयोग हुआ है।

नहाने का साबुन – साबुन पुल्लिंग और एकवचन है। इसलिए उसके पहले का प्रयोग हुआ है।

'के' का प्रयोग – बहुवचन संज्ञा शब्दों के साथ हुआ है।

रेशमा के बच्चे – बच्चे बहुवचन हैं, अतः बच्चे के पहले 'के' का प्रयोग हुआ है।

बनारस के आम – आम पुल्लिंग एवं बहुवचन शब्द है। अतः उसके पहले 'के' प्रयुक्त है।

'की' का प्रयोग स्त्रीलिंग सूचक – संज्ञा शब्दों के साथ प्रयोग हुआ है।

झाँसी की रानी – रानी स्त्रीलिंग है। इसलिए उसके पूर्व 'की' लगा है।

पेड़ की छाया – छाया स्त्रीलिंग है, इसलिए उसके पूर्व

unacademy

Code + PSHAH

50%

THANK YOU!

follow